हैदराबाद के ‘चार कमान’

कला-संस्कृति और शहरी विरासत (मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-I) | समाचार संदर्भ: जुलाई 2026 में ऐतिहासिक द्वारों के संरक्षण की पहल | प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

जुलाई 2026 की रिपोर्टों में हैदराबाद के चार ऐतिहासिक द्वारों, जिन्हें 'चार कमान' कहा जाता है, के संरक्षण की पहल सामने आई। रिपोर्टों में स्थानीय सांसद की घोषणा के आधार पर निविदाएँ आमंत्रित करने और सलाहकार नियुक्त करने के लिए प्रशासनिक स्वीकृति मिलने की बात कही गई। इसे काम पूरा हो जाने का प्रमाण नहीं समझना चाहिए। यह विषय केवल पुरानी इमारतों को सुंदर बनाने का नहीं है। चार कमान पुराने हैदराबाद की शहरी योजना, शाही परिसर और सार्वजनिक स्थानों के संबंध को समझने का माध्यम हैं।

चार कमान क्या हैं?

'कमान' यहाँ मेहराबदार प्रवेश-द्वार को कहते हैं। चार कमान चार अलग-अलग सजावटी द्वारों का समूह है। ये गुलजार हौज के आसपास और चारमीनार के निकट पुराने शहर के ऐतिहासिक क्षेत्र का हिस्सा हैं। चारमीनार और चार कमान एक ही स्मारक के दो नाम नहीं हैं। चारमीनार चार मीनारों वाली प्रमुख इमारत है; चार कमान उसके आसपास के शहरी परिसर से जुड़े चार अलग द्वार हैं। इनके बीच का संबंध पूरे विरासत-क्षेत्र को समझने में मदद करता है।

किस दौर की विरासत?

यह परिसर कुतुबशाही काल से संबंधित है। मुहम्मद कुली कुतुब शाह के समय 1591 में हैदराबाद और चारमीनार का निर्माण जुड़ा हुआ है। इतिहासकारों के अनुसार चार कमान उसके कुछ वर्ष बाद, लगभग 1594 में बने माने जाते हैं। कमानों की तारीख को चारमीनार की 1591 की तारीख से नहीं मिलाना चाहिए। इन द्वारों ने शाही महलों और कार्यालयों की ओर जाने वाले प्रवेश के रूप में भूमिका निभाई। राज्य के पुरातत्व विभाग की ऐतिहासिक कमानों संबंधी सामग्री भी चार कमान को शाही महल और कार्यालय परिसरों के द्वारों से जोड़ती है।

चार द्वारों को पहचानें:

- **मछली कमान:** परिसर के उत्तर की ओर। इसका प्रचलित नाम मछली से जुड़ा है।
- **काली कमान:** पूर्व की ओर।
- **शेर-ए-बातिल कमान:** पश्चिम की ओर; ऐतिहासिक विवरणों में नाम के दूसरे रूप भी मिलते हैं।
- **चारमीनार कमान:** दक्षिण की ओर। यह स्वयं चारमीनार इमारत नहीं है।

ये दिशाएँ द्वारों के आपसी विन्यास को समझने के लिए हैं, किसी सड़क-मार्ग या वर्तमान यातायात का निर्देश नहीं। नामों की स्थानीय वर्तनी में भिन्नता मिल सकती है।

शहरी योजना में इनका महत्व:

एक केंद्रीय सार्वजनिक स्थान: चार द्वारों के बीच का क्षेत्र शाही परिसर में प्रवेश से जुड़ा था। ऐतिहासिक विवरणों में इसे 'जिलाउ खाना' कहा गया है, अर्थात शाही प्रवेश के पहले का स्थान या प्रांगण। **समारोह और प्रशासन:** अधिकारियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों का आना-जाना इस स्थान से जुड़ा था। द्वार केवल अलग खड़े सजावटी ढाँचे नहीं थे; वे तत्कालीन सत्ता और दैनिक गतिविधियों के भौतिक संगठन का हिस्सा थे। **पूरे परिसर की पहचान:** चारमीनार, द्वार, हौज और आसपास की गलियों को साथ देखने से पुराने

शहर की संरचना स्पष्ट होती है। केवल एक प्रसिद्ध इमारत बचाकर आसपास का ऐतिहासिक संबंध खो देना संरक्षण की अधूरी समझ होगी।

संरक्षण की चुनौती:

पुराने ढाँचों पर उम्र, मौसम, प्रदूषण, यातायात और घने व्यावसायिक उपयोग का दबाव पड़ता है। सतह का पलस्तर खराब होना और संरचनात्मक कमजोरी एक ही समस्या नहीं हैं। बाहर से रंग करना पर्याप्त नहीं, पहले नुकसान का कारण समझना जरूरी है। विरासत-क्षेत्र जीवित शहर का हिस्सा भी है। उसके आसपास दुकानें, घर और रोजमर्रा का आवागमन होता है। इसलिए सुरक्षा और संरक्षण के साथ स्थानीय आजीविका तथा सार्वजनिक पहुँच का संतुलन जरूरी है।

वैज्ञानिक संरक्षण कैसा हो?

पहले दस्तावेजीकरण: पुराने अभिलेख, फोटो और वर्तमान स्थिति का रिकॉर्ड तैयार किया जाए। इससे मूल सामग्री और बाद में किए गए बदलावों को समझने में मदद मिलती है। **विशेषज्ञों की जाँच:** दरार, पानी के प्रवेश और सामग्री के क्षरण का मूल्यांकन हो। उपचार केवल दिखाई देने वाले नुकसान पर नहीं, उसके कारण पर भी केंद्रित हो। **अनुकूल सामग्री:** नई मरम्मत से पुरानी सामग्री को नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। बाद की संरक्षण रिपोर्ट में पारंपरिक, विरासत-अनुकूल तकनीकों और चूने के गारे का उल्लेख है। लेकिन किसी हिस्से में कौन-सी सामग्री इस्तेमाल हो, यह विशेषज्ञ जाँच से तय होना चाहिए। **स्थानीय सहभागिता:** दुकानदारों, निवासियों और नियमित उपयोगकर्ताओं से संवाद मरम्मत के दौरान सुरक्षा और पहुँच बेहतर कर सकता है। संरक्षण के बाद रखरखाव की जिम्मेदारी भी स्पष्ट हो।

दो अलग खबरों को न मिलाएँ:

जुलाई में ही हैदराबाद की आठ दूसरी ऐतिहासिक कमानों के लिए 11.86 करोड़ रुपये की योजना की खबर भी आई थी। उस सूची में हुसैनी आलम, दीवान देवड़ी और दबीरपुरा जैसी कमानें शामिल थीं। आठ कमानों की उस सूची और चार कमान के चार द्वारों को एक ही परियोजना बताना गलत होगा। अगस्त की बाद की रिपोर्ट में चार कमान के संरक्षण और प्रकाश-व्यवस्था की चर्चा हुई। जुलाई के समाचार संदर्भ के साथ उसे बाद की जानकारी के रूप में ही पढ़ना चाहिए। उपलब्ध रिपोर्टों से अक्टूबर तक पूरे कार्य के समाप्त होने की पुष्टि नहीं की गई है।

निष्कर्ष:

चार कमान का महत्व उनकी बनावट के साथ पुराने हैदराबाद की शहरी योजना में भी है। संरक्षण का लक्ष्य स्मारक की पहचान बचाना, संरचनात्मक सुरक्षा बढ़ाना और जीवित शहर से उसका संबंध बनाए रखना होना चाहिए। प्रशासनिक स्वीकृति पहला कदम हो सकती है; गुणवत्ता और दीर्घकालीन रखरखाव उसके बाद की कसौटियाँ हैं।

मुख्य परीक्षा शैली: अभ्यास प्रश्न

'शहरी विरासत का संरक्षण केवल एक स्मारक की मरम्मत नहीं, उसके ऐतिहासिक परिसर और स्थानीय समुदाय से संबंध की रक्षा भी है।' चार कमान के उदाहरण से स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: शहरी विरासत में स्मारकों के साथ गलियाँ, सार्वजनिक स्थान और सामाजिक उपयोग भी शामिल हैं। चार कमान पुराने हैदराबाद के इस संयुक्त स्वरूप का उदाहरण हैं।

मुख्य भाग में: चार द्वार शाही महल और कार्यालयों के प्रवेश से जुड़े थे। उन्हें चारमीनार और आसपास के प्रांगण से अलग करके देखने पर उनका ऐतिहासिक कार्य अस्पष्ट हो जाता है। आज यातायात, प्रदूषण और घने उपयोग के बीच संरक्षण करना है। इसके

लिए संरचनात्मक जाँच, दस्तावेजीकरण और पुरानी सामग्री के अनुकूल मरम्मत जरूरी है। स्थानीय दुकानदारों और निवासियों से संवाद सुरक्षा, पहुँच और नियमित रखरखाव में मदद कर सकता है। केवल रंगाई या सजावटी प्रकाश मूल समस्या का विकल्प नहीं है।

निष्कर्ष में: संरक्षण की सफलता ऐतिहासिक पहचान, सुरक्षित उपयोग और समुदाय की भागीदारी को साथ लेकर चलने में है।

स्रोत और सीमाएँ

- तेलंगाना पुरातत्व विभाग: ऐतिहासिक कमानों का परिचय (पढ़ा): https://tgarch.telangana.gov.in/pdf/Kamaans.pdf
- हैदराबाद जिला प्रशासन: चारमीनार का इतिहास (पढ़ा): https://hyderabad.telangana.gov.in/tourist-place/charminar/
- 7 जुलाई 2026: चार कमान का इतिहास और संरक्षण पहल (पढ़ा): https://indianexpress.com/article/explained/explained-history/char-kaman-hyderabad-significance-restoration-plan-10775442/
- 4 जुलाई 2026: चार द्वारों की संरक्षण पहल की रिपोर्ट (पढ़ा): https://www.siasat.com/hyderabads-400-year-old-char-kaman-set-to-get-a-facelift-3501470/
- जुलाई में आठ अन्य कमानों की अलग योजना का विवरण (पढ़ा): https://www.thehindu.com/news/national/telangana/hyderabads-historic-arches-from-qutb-shahi-and-asaf-jahi-eras-set-for-restoration/article71175020.ece
- 28 अगस्त 2026 की बाद की संरक्षण रिपोर्ट (पढ़ा): https://telanganatoday.com/hyderabads-historic-char-kaman-to-undergo-restoration-conservation-and-heritage-lighting
- **सीमाएँ:** चार द्वारों की पहल और आठ अन्य कमानों की अलग योजना दो भिन्न खबरें हैं; ₹11.86 करोड़ का आँकड़ा आठ अन्य कमानों से जुड़ा है, चार द्वारों से नहीं। निर्माण-वर्ष लगभग 1594 बताया गया है (1591 निश्चित नहीं)। चारमीनार इन द्वारों से अलग स्मारक है। अगस्त 2026 की रिपोर्ट बाद की स्थिति बताती है; अक्टूबर तक कार्य पूर्ण होने का कोई दावा नहीं। लोक-कथाएँ तथ्य के रूप में नहीं रखी गईं।

इसी विषय का प्रारंभिक परीक्षा (तथ्य) लेख: हैदराबाद के चार कमान — प्रमुख तथ्य